चेटी यक्षिणी साधना विधि

चेटी यक्षिणी साधना एक रहस्यमयी और शक्तिशाली साधना है जो साधक को अनेक सिद्धियां और लाभ प्रदान करती है। यह साधना करने से साधक को यक्षिणी की कृपा प्राप्त होती है जिससे उसकी सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं।

साधना विधि

1. स्थान चयन: साधना के लिए एक शांत और पवित्र स्थान का चयन करें।

2. स्वच्छता: स्नान करके स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें।

3. आपको दी गई सभी सामग्री को अपने सामने लाल कपडा बिछाकर रखे. यंत्र और माला को पानी-कच्चे दूध – पानी से धो ले

4. घी का दीपक जलाये।

5. आरंभिक प्रार्थना: भगवान गणेश का ध्यान और प्रार्थना करें ताकि साधना बिना विघ्न के संपन्न हो।

6. अब ११ बार गणेश मंत्र का जप करे ॐ गं गणपतये नमः

7. ११ बार गुरु मंत्र का जप करे ॐ गुं गुरुभ्योः नमः

8. ११ बार कुलदेवी मंत्र का जप करे - ॐ ह्रीं कुल देवी देवताये नमः

9. अब यक्षिणी का ध्यान करते हुये प्रार्थना करे "हे देवी मै यथा शक्ति आपकी साधना करने जा रही हू/ जा रहा हू, भूल चूक क्षमा करे और मुझे सफलता का आशिर्वाद दे"

10- मंत्र: अब दिया गया मंत्र का जप करना शुरु करे

11. किसी भी मंगलवार, शुक्रवार, पुर्णिमा या नवरात्रि से साधना शुरु करे।

12. इस साधना को २१ दिन तक सूर्यास्त के पश्चिम दिशा की तरफ मुंह करके शुरु करे।

चेटी यक्षिणी साधना के लाभ

1. सभी इच्छाओं की पूर्ति: साधक की सभी इच्छाएं और कामनाएं पूर्ण होती हैं।

2. धन और समृद्धि: साधना से साधक को धन और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

3. आकर्षण शक्ति: साधक में अद्वितीय आकर्षण शक्ति विकसित होती है जिससे वह लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सकता है।

4. वशीकरण: साधक दूसरों पर प्रभाव डालने और उन्हें अपने वश में करने की शक्ति प्राप्त करता है।

5. संकटों से मुक्ति: जीवन के सभी प्रकार के संकटों और समस्याओं से मुक्ति मिलती है।

6. सुख और शांति: साधक के जीवन में सुख और शांति का वास होता है।

7. सिद्धियों की प्राप्ति: साधक को अनेक प्रकार की सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

8. साहस और आत्मविश्वास: साधक का साहस और आत्मविश्वास बढ़ता है।

9. स्वास्थ्य लाभ: शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है।

10. शत्रुओं से रक्षा: साधक के शत्रु उससे दूर रहते हैं और उसे कोई हानि नहीं पहुंचा सकते।

11. आध्यात्मिक उन्नति: साधक की आध्यात्मिक उन्नति होती है और वह उच्च आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करता है।

12. शुभ फल: साधना से साधक को जीवन के हर क्षेत्र में शुभ फल प्राप्त होते हैं।

13. परिवार का कल्याण: साधक के परिवार का कल्याण होता है और सभी सदस्य सुखी रहते हैं।

14. मान-सम्मान: साधक को समाज में मान-सम्मान प्राप्त होता है।

15. कार्य सिद्धि: साधक के सभी कार्य बिना किसी बाधा के सिद्ध होते हैं।

16. सकारात्मक ऊर्जा: जीवन में सकारात्मक ऊर्जा और प्रेरणा का संचार होता है।

17. दुष्प्रभावों से रक्षा: साधक नकारात्मक ऊर्जाओं और दुष्प्रभावों से सुरक्षित रहता है।

18. सच्चे मित्रों की प्राप्ति: साधक को सच्चे मित्र और शुभचिंतक मिलते हैं।

19. कुंडली दोषों का नाश: साधना से कुंडली के दोष दूर होते हैं।

20. दीर्घायु: साधक को दीर्घायु का वरदान मिलता है।

साधना के दौरान सावधानियाँ

1. पवित्रता का ध्यान: साधना के दौरान शरीर और मन की पवित्रता बनाए रखें।

2. आहार: सात्विक आहार का पालन करें और तामसिक भोजन से बचें।

3. नियमितता: साधना नियमित रूप से करें और बीच में बाधा न आने दें।

4. श्रद्धा और विश्वास: साधना को पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करें।

5. संकल्प: साधना शुरू करने से पहले संकल्प लें और साधना समाप्ति पर इसे पूर्ण करें।

6. साधना मे रोकः एक बार साधना शुरु करने के बाद साधना को बीच मे न बंद करे।

चेटी यक्षिणी साधना एक अत्यंत प्रभावशाली और पवित्र साधना है। इसे विधिपूर्वक और श्रद्धापूर्वक करने से साधक को अनेक सिद्धियों और लाभों की प्राप्ति होती है।

साधना हमेशा अच्छी भावना के तहत ही करना चाहिये। हो सके तो समाज मे जरूरतमंदो की मदत करनी चाहिये। किसी भी तरह से इस साधना का दुरुपयोग की जिम्मेदारी दिव्ययोग आश्रम या इससे जुड़े सदस्यों की नही होगी।